कुबेर चालीसा
(Kuber Chalisa)

॥कुबेर चालीसा॥

॥ दोहा ॥

जैसे अटल हिमालय,
और जैसे अडिग सुमेर ।
ऐसे ही स्वर्ग द्वार पे,
अविचल खडे कुबेर ॥

विघ्न हरण मंगल करण,
सुनो शरणागत की टेर ।
भक्त हेतु वितरण करो,
धन माया के ढेर ॥

॥ चौपाई ॥

जै जै जै श्री कुबेर भण्डारी ।
धन माया के तुम अधिकारी ॥

तप तेज पुंज निर्भय भय हारी ।
पवन वेग सम सम तनु बलधारी ॥

स्वर्ग द्वार की करें पहरे दारी ।
सेवक इंद्र देव के आज्ञाकारी ॥

यक्ष यक्षणी की है सेना भारी ।
सेनापति बने युद्ध में धनुधारी **॥4॥**

महा योद्धा बन शस्त्र धारैं ।
युद्ध करैं शत्रु को मारैं ॥

सदा विजयी कभी ना हारैं ।
भगत जनों के संकट टारैं ॥

प्रपितामह हैं स्वयं विधाता ।
पुलिस्ता वंश के जन्म विख्याता ॥

विश्रवा पिता इडविडा जी माता ।
विभीषण भगत आपके भ्राता **॥8॥**

शिव चरणों में जब ध्यान लगाया ।
घोर तपस्या करी तन को सुखाया ॥

शिव वरदान मिले देवत्य पाया ।
अमृत पान करी अमर हुई काया ॥

धर्म ध्वजा सदा लिए हाथ में ।
देवी देवता सब फिरैं साथ में ॥

पीताम्बर वस्त्र पहने गात में ।
बल शक्ति पूरी यक्ष जात में **॥12॥**

स्वर्ण सिंहासन आप विराजैं ।
त्रिशूल गदा हाथ में साजैं ॥

शंख मृदंग नगारे बाजैं ।
गंधर्व राग मधुर स्वर गाजैं ॥

चौंसठ योगनी मंगल गावैं ।
ऋद्धि-सिद्धि नित भोग लगावैं ॥

दास दासनी सिर छत्र फिरावैं ।
यक्ष यक्षणी मिल चंवर ढूलावैं **॥16॥**

ऋषियों में जैसे परशुराम बली हैं ।
देवन्ह में जैसे हनुमान बली हैं ॥

पुरुषों में जैसे भीम बली हैं ।
यक्षों में ऐसे ही कुबेर बली हैं ॥

भगतों में जैसे प्रहलाद बड़े हैं ।
पक्षियों में जैसे गरुड़ बड़े हैं ॥

नागों में जैसे शेष बड़े हैं ।
वैसे ही भगत कुबेर बड़े हैं **॥20॥**

कांधे धनुष हाथ में भाला ।
गले फूलों की पहनी माला ॥

स्वर्ण मुकुट अरु देह विशाला ।
दूर-दूर तक होए उजाला ॥

कुबेर देव को जो मन में धारे ।
सदा विजय हो कभी न हारे ॥

बिगड़े काम बन जाएं सारे ।
अन्न धन के रहें भरे भण्डारे **॥24॥**

कुबेर गरीब को आप उभारैं ।
कुबेर कर्ज को शीघ्र उतारैं ॥

कुबेर भगत के संकट टारैं ।
कुबेर शत्रु को क्षण में मारैं ॥

शीघ्र धनी जो होना चाहे ।
क्युं नहीं यक्ष कुबेर मनाएं ॥

यह पाठ जो पढ़े पढ़ाएं ।
दिन दुगना व्यापार बढ़ाएं **॥28॥**

भूत प्रेत को कुबेर भगावैं ।
अड़े काम को कुबेर बनावैं ॥

रोग शोक को कुबेर नशावैं ।
कलंक कोढ़ को कुबेर हटावैं ॥

कुबेर चढ़े को और चढ़ादे ।
कुबेर गिरे को पुन: उठा दे ॥

कुबेर भाग्य को तुरंत जगा दे ।
कुबेर भूले को राह बता दे **॥32॥**

प्यासे की प्यास कुबेर बुझा दे ।

भूखे की भूख कुबेर मिटा दे ॥

रोगी का रोग कुबेर घटा दे ।
दुखिया का दुख कुबेर छुटा दे ॥

बांझ की गोद कुबेर भरा दे ।
कारोबार को कुबेर बढ़ा दे ॥

कारागार से कुबेर छुड़ा दे ।
चोर ठगों से कुबेर बचा दे **॥36॥**

कोर्ट केस में कुबेर जितावै ।
जो कुबेर को मन में ध्यावै ॥

चुनाव में जीत कुबेर करावैं ।
मंत्री पद पर कुबेर बिठावैं ॥

पाठ करे जो नित मन लाई ।
उसकी कला हो सदा सवाई ॥

जिसपे प्रसन्न कुबेर की माई ।
उसका जीवन चले सुखदाई **॥40॥**

जो कुबेर का पाठ करावै ।
उसका बेड़ा पार लगावै ॥

उजड़े घर को पुन: बसावै ।
शत्रु को भी मित्र बनावै ॥

सहस्त्र पुस्तक जो दान कराई ।
सब सुख भोद पदार्थ पाई ॥

प्राण त्याग कर स्वर्ग में जाई ।
मानस परिवार कुबेर कीर्ति गाई **॥44॥**

॥ दोहा ॥

शिव भक्तों में अग्रणी,
श्री यक्षराज कुबेर ।
हृदय में ज्ञान प्रकाश भर,
कर दो दूर अंधेर ॥

कर दो दूर अंधेर अब,
जरा करो ना देर ।
शरण पड़ा हूं आपकी,
दया की दृष्टि फेर ॥

नित्त नेम कर प्रातः ही,
पाठ करौं चालीसा ।
तुम मेरी मनोकामना,
पूर्ण करो जगदीश ॥

मगसर छठि हेमन्त ऋतु,
संवत चौसठ जान ।
अस्तुति चालीसा शिवहि,
पूर्ण कीन कल्याण ॥

****

Kuber Chalisa (in English)

॥ doha ॥

jaise ki himaalay,
aur jaise adig sumer ॥
aise hee svarg dvaar pe,
avichal khade kuber ॥

vighn haran mangal karana,
suno sharanaagat kee ter ॥
bhakt vikaas vitaran karo,
dhan maaya ke haay ॥

॥ chaupaee ॥

jay jay jay shree kuber bhandaaree ॥
dhan maaya ke tum adhikaaree ॥

tap tej punj nirbhay bhay haaree ॥
pavan veg sam sam tanu baladhaaree ॥

svarg dvaar kee raksha karo ॥
sevak indr dev ke aagyaakaaree ॥

yaksh yakshanee kee hai sena bhaaree ॥
senaapati bane yuddh mein dhanudhaaree **॥4 ॥**

maha yoddha ban shastr dhaaren ॥
yuddh karain shatru ko maarain ॥

sada vijayee kabhee na haaren ॥

bhagat logon ke sankat taaren ॥

prapitaamah hain svayan vidhaata ॥
pulista raajavansh ke janm sangrahaalay ॥

vishrava pita idvida jee maata ॥
vibheeshan bhagat tera bhraata **॥8 ॥**

shiv charan mein jab dhyaan lagaaya jaata hai ॥
ghor tapasya kari tan ko sukhaaya ॥

shiv shrrngaar mile devata paaya ॥
amrt paan kari amar huee kaaya ॥

dharm dhvaja sada haath mein ॥
devee devata sab phirain saath mein ॥

peetaambar vastr paridhaan gaat mein ॥
bal shakti poorn yaksh jaat mein **॥12 ॥**

svarn sinhaasan aap viraajen ॥
trishool gada haath mein saajai ॥

shankh mrdang nagare baajen ॥
gandharv raag madhur svar gaayen ॥

chaunsath yogani mangal gaavain ॥
rddhi-siddhi nit bhogen ॥

daas daasaanee sir chhatr firaaven ॥

yaksh yakshanee mil chanvar dhulaavain **॥16 ॥**

kuber gareeb ko aap shobhaayamaan ॥
kuber rn ko sheeghr udghaatit karen ॥

kuber bhagat ke sankat taaran ॥
kuber shatru ko kshan mein maaren ॥

sheeghr dhanee jo hona chaahata hai ॥
kyoon nahin yaksh kuber manae ॥

yah paath jo padha gaya ॥
din dugana vyaapaar raajakumaaree **॥28 ॥**

bhoot pret ko kuber bhaagavain ॥
ade kaam ko kuber banaavain ॥

rog shok ko kuber nashaavain ॥
kalank kodh ko kuber hataaven ॥

kuber chadhe ko aur chadhaade ॥
kuber pratibha ko pun: utha de ॥

kuber bhaagy ko turant jaga de ॥
kuber bhoole ko raah bata de **॥32 ॥**

pyaase kee pyaas kuber boha de ॥
rishtedaar kee bhookh kuber bete de ॥

mareez ka rog kuber ghata de ॥

duhkhiya ka duhkh kuber chhuta de ॥

baanjh kee god kuber bhara de ॥
bizanes ko kuber badha de ॥

kaaraagaar se kuber vichaaradhaara de ॥
chor thagon se kuber bacha de **॥36 ॥**

kort kes mein kuber jitaavai ॥
jo kuber ko man mein dhyaavai ॥

chunaav mein jeet kuber karaaven ॥
mantree pad par kuber devataavain ॥

paath kare jo nit man laee ॥
usakee kala ho sada savaee ॥

jisape aakarshak kuber kee maee ॥
unaka jeevan chale sukhadaee ॥40 ॥

jo kuber ka paath karaavai ॥
usaka beda paar lagaavai ॥

ujje ghar ko pun: basaavai ॥
shatru ko bhee mitr banaavai ॥

sahastr pustak jo daan kiya ॥
sab sukh bhod padaarth paaya ॥

praan tyaag kar svarg mein jay ॥

maanas parivaar kuber keerti gaee ॥44 ॥

॥ doha ॥

shivabhakton mein agranee,
shree yaksharaaj kuber ॥
hrday mein gyaan prakaash bhar,
kar do door andhere ॥

kar do door ke andhere ab,
jara karo na der ॥
sharan padha hoon aapakee,
daya kee drshti pher ॥

nitt nem kar subah hee,
paath karaun chaaleesa ॥
tum mere man,
poorn karo jagadeesh ॥

magasar chhathi hemant rtu,
sanvat chausath jaan ॥
astuti chaaleesa shivahi,
poorn keen kalyaan **॥**

****